

द्वितीयः पाठः
स्वर्णकाकः



0961CH02

प्रस्तुतोऽयं पाठः श्रीपद्मशास्त्रिणा विरचितम् “विश्वकथाशतकम्” इति कथासङ्ग्रहात् गृहीतोऽस्ति। अत्र विविधराष्ट्रेषु व्याप्तानां शतं लोककथानां वर्णनं विद्यते। एषा कथा वर्म (म्याँमार) देशस्य श्रेष्ठा लोककथा अस्ति। अस्यां कथायां लोभस्य दुष्परिणामः तथा च त्यागस्य सुपरिणामः स्वर्णपक्षकाकमाध्यमेन वर्णितोऽस्ति।

पुरा कस्मिंश्चिद् ग्रामे एका निर्धना वृद्धा स्त्री न्यवसत्। तस्याः च एका दुहिता विनम्रा मनोहरा चासीत्। एकदा माता स्थाल्यां तण्डुलान् निक्षिप्य पुत्रीम् आदिशत्। “सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।” किञ्चित् कालादनन्तरम् एको विचित्रः काकः समुड्डीय तस्याः समीपम् अगच्छत्।



नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः। तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तञ्च विलोक्य बालिका रोदितुमारब्धा। तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत्- “तण्डुलान् मा भक्षय। मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते।” स्वर्णपक्षः काकः प्रोवाच, “मा शुचः। सूर्योदयात्प्राग् ग्रामाद्बहिः पिप्पलवृक्षमनु त्वया आगन्तव्यम्। अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।” प्रहर्षिता बालिका निद्रामपि न लेभे।

सूर्योदयात्पूर्वमेव सा तत्रोपस्थिता। वृक्षस्योपरि विलोक्य सा च आश्चर्यचकिता सञ्जाता यत् तत्र स्वर्णमयः प्रासादो वर्तते। यदा काकः शयित्वा प्रबुद्धस्तदा तेन स्वर्णगवाक्षात्कथितं “हंहो बाले! त्वमागता, तिष्ठ, अहं त्वत्कृते सोपानमवतारयामि, तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयम् ताम्रमयं वा”? कन्या अवदत् “अहं निर्धनमातुः दुहिता अस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि।” परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्ण-भवनम् आरोहता।



चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तूनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता। श्रान्तां तां विलोक्य काकः अवदत्-“पूर्वं लघुप्रातराशः क्रियताम्-वद त्वं स्वर्णस्थाल्यां

भोजनं करिष्यसि किं वा रजतस्थाल्याम् उत ताम्रस्थाल्याम्”? बालिका अवदत्- ताम्रस्थाल्याम् एव अहं - “निर्धना भोजनं करिष्यामि।” तदा सा आश्चर्यचकिता सञ्जाता यदा स्वर्णकाकेन स्वर्णस्थाल्यां भोजनं “परिवेषितम्।” न एतादृशम् स्वादु भोजनमद्यावधि बालिका खादितवती। काकोऽवदत्- बालिके! अहमिच्छामि यत् त्वम् सर्वदा अत्रैव तिष्ठ परं तव माता तु एकाकिनी वर्तते। अतः “त्वं शीघ्रमेव स्वगृहं गच्छ।”

इत्युक्त्वा काकः कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः निस्सार्य तां प्रत्यवदत्- “बालिके! यथेच्छं गृहाण मञ्जूषामेकाम्।” लघुतमां मञ्जूषां प्रगृह्य बालिकया कथितम् इयत् एव मदीयतण्डुलानां मूल्यम्।

गृहमागत्य तया मञ्जूषा समुद्घाटिता, तस्यां महार्हाणि हीरकाणि विलोक्य सा प्रहर्षिता तद्दिनाद्धनिका च सज्जाता।



तस्मिन्नेव ग्रामे एका अपरा लुब्धा वृद्धा न्यवसत्। तस्या अपि एका पुत्री आसीत्। ईर्ष्या सा तस्य स्वर्णकाकस्य रहस्यम् ज्ञातवती। सूर्यातपे तण्डुलान् निक्षिप्य तयापि स्वसुता रक्षार्थं नियुक्ता। तथैव स्वर्णपक्षः काकः तण्डुलान् भक्षयन् तामपि तत्रैवाकारयत्। प्रातस्तत्र गत्वा सा काकं निर्भर्त्सयन्ती प्रावोचत्-“ भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।” काकोऽब्रवीत्-“अहं त्वत्कृते सोपानम् अवतारयामि। तत्कथय स्वर्णमयं रजतमयं ताम्रमयं वा।” गर्वितया बालिकया प्रोक्तम्-“स्वर्णमयेन सोपानेन अहम् आगच्छामि।” परं स्वर्णकाकस्तत्कृते ताम्रमयं सोपानमेव प्रायच्छत्। स्वर्णकाकस्तां भोजनमपि ताम्रभाजने एव अकारयत्।

प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकेन कक्षाभ्यन्तरात् तिस्रः मञ्जूषाः तत्पुरः समुत्क्षिप्ताः। लोभाविष्टा सा बृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती। गृहमागत्य सा तर्षिता यावद् मञ्जूषामुद्घाटयति तावत् तस्यां भीषणः कृष्णसर्पो विलोकितः। लुब्धया बालिकया लोभस्य फलं प्राप्तम्। तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत्।

शब्दार्थः

| | | | |
|-----------------|---------------------|-----------------|-------------------|
| न्यवसत् | अवसत् | रहता था/रहती थी | (He/She) resided |
| दुहिता | सुता | पुत्री | Daughter |
| स्थाल्याम् | स्थालीपात्रे | थाली में | In a plate |
| खगेभ्यः | पक्षिभ्यः | पक्षियों से | From birds |
| समुड्डीय | उत्प्लुत्य | उड़कर | Flying |
| स्वर्णपक्षः | स्वर्णमयः पक्षः | सोने का पंख | Golden wing |
| रजतचञ्चुः | रजतमयः चञ्चुः | चाँदी की चोंच | Silver beak |
| तण्डुलान् | अक्षतान् | चावलों को | The rice |
| निवारयन्ती | वारणं कुर्वन्ती | रोकती हुई | Stopping |
| मा शुचः | शोकं मा कुरु | दुःख मत करो | Don't worry |
| प्रोवाच | अकथयत् | कहा | (He/She) said |
| प्रहर्षिता | प्रसन्ना | खुश हुई | She) became happy |
| प्रासादः | भवनम् | महल | Palace |
| गवाक्षात् | वातायनात् | खिड़की से | From the window |
| सोपानम् | सोपानम् | सीढ़ी | Stair |
| अवतारयामि | अवतीर्णं करोमि | उतारता हूँ | (I) hang |
| आससाद | प्राप्नोत् | पहुँचा | (He/She) reached |
| विलोक्य | दृष्ट्वा | देखकर | Looking |
| प्राह | उवाच | कहा | (He/She) said |
| प्रातराशः | कल्यवर्तः | सुबह का नाश्ता | Breakfast |
| व्याजहार | अकथयत् | कहा | (He/She) said |
| पर्यवेषितम् | पर्यवेषणं कृतम् | परोसा गया | Served |
| महार्हाणि | बहुमूल्यानि | बहुमूल्य | Costly |
| लुब्धा | लोभवशीभूता | लोभी | Greedy (f) |
| निर्भर्त्सयन्ती | भर्त्सनां कुर्वन्ती | निन्दा करती हुई | Scolding |
| पर्यत्यजत् | अत्यजत् | छोड़ दिया | Casted away |



1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) माता काम् आदिशत्?
 (ख) स्वर्णकाकः कान् अखादत्?
 (ग) प्रासादः कीदृशः वर्तते?
 (घ) गृहमागत्य तया का समुद्घाटिता?
 (ङ) लोभाविष्टा बालिका कीदृशीं मञ्जूषां नयति?

(अ) अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

- (क) निर्धनायाः वृद्धायाः दुहिता कीदृशी आसीत्?
 (ख) बालिकया पूर्वं कीदृशः काकः न दृष्टः आसीत्?
 (ग) निर्धनायाः दुहिता मञ्जूषायां कानि अपश्यत्?
 (घ) बालिका किं दृष्ट्वा आश्चर्यचकिता जाता?
 (ङ) गर्विता बालिका कीदृशं सोपानम् अयाचत कीदृशं च प्राप्नोत्।

2. (क) अधोलिखितानां शब्दानां विलोमपदं पाठात् चित्वा लिखत-

- (i) पश्चात् -
 (ii) हसितुम् -
 (iii) अधः -
 (iv) श्वेतः -
 (v) सूर्यास्तः -
 (vi) सुप्तः -

(ख) सन्धिं कुरुत-

- (i) नि + अवसत् -
 (ii) सूर्य + उदयः -
 (iii) वृक्षस्य + उपरि -
 (iv) हि + अकारयत् -
 (v) च + एकाकिनी -
 (vi) इति + उक्त्वा -

| | | |
|---------------------|---|-------|
| (vii) प्रति + अवदत् | - | |
| (viii) प्र + उक्तम् | - | |
| (ix) अत्र + एव | - | |
| (x) तत्र + उपस्थिता | - | |
| (xi) यथा + इच्छम् | - | |

3. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) ग्रामे निर्धना स्त्री अवसत्।
 (ख) स्वर्णकाकं निवारयन्ती बालिका प्रार्थयत्।
 (ग) सूर्योदयात् पूर्वमेव बालिका तत्रोपस्थिता।
 (घ) बालिका निर्धनमातुः दुहिता आसीत्।
 (ङ) लुब्धा वृद्धा स्वर्णकाकस्य रहस्यमभिज्ञातवती।

4. प्रकृति-प्रत्यय-संयोगं कुरुत (पाठात् चित्वा वा लिखत)-

- (क) वि + लोक् + ल्यप् -
 (ख) नि + क्षिप् + ल्यप् -
 (ग) आ + गम् + ल्यप् -
 (घ) दृश् + क्त्वा -
 (ङ) शी + क्त्वा -
 (च) लघु + तमप् -

5. प्रकृतिप्रत्यय-विभागं कुरुत-

- (क) रोदितुम् -
 (ख) दृष्ट्वा -
 (ग) विलोक्य -
 (घ) निक्षिप्य -
 (ङ) आगत्य -
 (च) शयित्वा -
 (छ) लघुतमम् -

6. अधोलिखितानि कथनानि कः/का, कं/कां च कथयति-

- | कथनानि | कः/का | कं/काम् |
|----------------------------------|-------|---------|
| (क) पूर्वं प्रातराशः क्रियाताम्। | | |

- (ख) सूर्यातपे तण्डुलान् खगेभ्यो रक्ष।
 (ग) तण्डुलान् मा भक्षय।
 (घ) अहं तुभ्यं तण्डुलमूल्यं दास्यामि।
 (ङ) भो नीचकाक! अहमागता, मह्यं तण्डुलमूल्यं प्रयच्छ।

7. उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु पञ्चमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- मूषकः बिलाद् बहिः निर्गच्छति (बिल)

- (क) जनः बहिः आगच्छति। (ग्राम)
 (ख) नद्यः निस्सरन्ति। (पर्वत)
 (ग) पत्राणि पतन्ति। (वृक्ष)
 (घ) बालकः विभेति?। (सिंह)
 (ङ) ईश्वरः त्रायते। (क्लेश)
 (च) प्रभुः भक्तं निवारयति। (पाप)

योग्यताविस्तारः

यह पाठ श्री पद्मशास्त्री द्वारा रचित “विश्वकथाशतकम्” नामक कथासंग्रह से लिया गया है, जिसमें विभिन्न देशों की सौ लोक कथाओं का संग्रह है। यह वर्मा देश की एक श्रेष्ठ कथा है, जिसमें लोभ और उसके दुष्परिणाम के साथ-साथ त्याग और उसके सुपरिणाम का वर्णन, एक सुनहले पंखों वाले कौवे के माध्यम से किया गया है।

लेखक परिचय - इस कथा के लेखक पद्म शास्त्री हैं। ये साहित्यायुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, शिक्षाशास्त्री और रसियन डिप्लोमा आदि उपाधियों से भूषित हैं। इन्हें विद्याभूषण व आशुकवि मानद उपाधियाँ भी प्राप्त हैं। इन्हें सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार समिति और राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त है। इनकी अनेक रचनाएँ हैं, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| 1. सिनेमाशतकम् | 2. स्वराज्यम् खण्डकाव्यम् |
| 3. लेनिनामृतम् महाकाव्यम् | 4. मदीया सोवियत यात्रा |
| 5. पद्यपञ्चतन्त्रम् | 6. बङ्गलादेशविजयः |
| 7. लोकतन्त्रविजयः | 8. विश्वकथाशतकम् |
| 9. चायशतकम् | 10. महावीरचरितामृतम् |

1. **भाषिक-विस्तार** - “किसी भी काम को करके” इस अर्थ में ‘क्त्वा’ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा- पठित्वा - पठ् + क्त्वा = पढ़कर
 गत्वा - गम् + क्त्वा = जाकर
 खादित्वा - खाद् + क्त्वा = खाकर

इसी अर्थ में अगर धातु (क्रिया) से पहले उपसर्ग होता है तो ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। धातु से पूर्व उपसर्ग होने की स्थिति में कभी भी ‘क्त्वा’ प्रत्यय का प्रयोग नहीं हो सकता और उपसर्ग न होने की स्थिति में कभी भी ल्यप् प्रत्यय नहीं हो सकता है।

यथा- उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य
 सम् + पूज् + ल्यप् = सम्पूज्य
 वि + लोकृ (लोक) + ल्यप् = विलोक्य
 आ + दा + ल्यप् = आदाय
 निर् + गम् + ल्यप् = निर्गत्य

2. प्रश्नवाचक शब्दों को अनिश्चयवाचक बनाने के लिए चित् और चन निपातों का प्रयोग किया जाता है। ये निपात जब सर्वनामपदों के साथ लगते हैं तो सर्वनाम पद होते हैं और जब अव्यय पदों के साथ प्रयुक्त होते हैं तो अव्यय होते हैं।

यथा- कः = कौन

| | |
|--|--|
| कः + चन = कश्चन = कोई | कः + चित् = कश्चित् = कोई |
| के + चन = केचन कोई (बहुवचन में) | के + चित् = केचित् (बहुवचन में) |
| का + चन = काचन (कोई स्त्री) | का + चित् = काचित् (कोई स्त्री) |
| काः + चन = काश्चन (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन) | काः + चित् = काश्चित् (कुछ स्त्रियाँ बहुवचन में) |

किम् शब्द के सभी वचनों, लिंगों व सभी विभक्तियों में चित् और चन का प्रयोग किया जा सकता है और उसे अनिश्चयवाचक बनाया जा सकता है। जैसे -

- | | |
|-------------------------------|--------------------------|
| 1. किञ्चित् | प्रथमा में |
| 2. केनचित् | तृतीया में |
| 3. केषाञ्चित् (केषाम् + चित्) | षष्ठी में |
| 4. कस्मिंश्चित् | सप्तमी में |
| 5. कस्याञ्चित् | सप्तमी (स्त्रीलिङ्ग में) |

इसी तरह चित् के स्थान पर चन का प्रयोग होता है। चित् और चन जब अव्ययपदों में लग जाते हैं तो वे अव्यय हो जाते हैं। जैसे -

| | |
|---------|-------|
| क्वचित् | क्वचन |
| कदाचित् | कदाचन |

3. संस्कृत में एक से चतुर (चार) तक संख्यावाची शब्द पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, तथा नपुंसक लिङ्ग में अलग-अलग रूपों में होते हैं पर पञ्च (पाँच) से उनका रूप सभी लिङ्गों में एक सा होता है।

| पुंल्लिङ्ग | स्त्रीलिङ्ग | नपुंसकलिङ्ग |
|------------|-------------|-------------|
| एकः | एका | एकम् |
| द्वौ | द्वे | द्वे |
| त्रयः | तिस्रः | त्रीणि |
| चत्वारः | चतस्रः | चत्वारि |

| एकवचन | पुंल्लिङ्ग | द्विवचन | बहुवचन |
|--------------|----------------|----------------|--------------|
| गच्छन् | गच्छन्तौ | गच्छन्तौ | गच्छन्तः |
| गच्छन्तम् | गच्छन्तौ | गच्छन्तौ | गच्छतः |
| गच्छता | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भिः |
| गच्छते | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भ्यः |
| गच्छतः | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भ्याम् | गच्छद्भ्यः |
| गच्छतः | गच्छतोः | गच्छतोः | गच्छताम् |
| गच्छति | गच्छतोः | गच्छतोः | गच्छत्सु |
| | | स्त्रीलिङ्ग | |
| गच्छन्ती | गच्छन्त्यौ | गच्छन्त्यौ | गच्छन्त्यः |
| गच्छन्तीम् | गच्छन्त्यौ | गच्छन्त्यौ | गच्छन्तीः |
| गच्छन्त्या | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभिः |
| गच्छन्त्यै | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभ्यः |
| गच्छन्त्याः | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभ्याम् | गच्छन्तीभ्यः |
| गच्छन्त्याः | गच्छन्त्योः | गच्छन्त्योः | गच्छन्तीनाम् |
| गच्छन्त्याम् | गच्छन्त्योः | गच्छन्त्योः | गच्छन्तीषु |

नपुंसक लिङ्ग में

| | | |
|--------|--------|----------|
| गच्छत् | गच्छती | गच्छन्ति |
| गच्छत् | गच्छती | गच्छन्ति |

शेष पुल्लिङ्गवत्

4. तरप् और तपम् प्रत्ययों में तर और तम शेष बचता है।

यथा - बलवत् + तरप् - बलवत्तर

लघु + तमप् - लघुतम

ये तुलनावाची प्रत्यय हैं। इनके उदाहरण देखें -

| | | |
|---------|-----------|-----------|
| लघु | लघुतर | लघुतम |
| महत् | महत्तर | महत्तम |
| श्रेष्ठ | श्रेष्ठतर | श्रेष्ठतम |
| मधुर | मधुरतर | मधुरतम |
| गुरु | गुरुतर | गुरुतम |
| तीव्र | तीव्रतर | तीव्रतम |
| प्रिय | प्रियतर | प्रियतम |

अध्येतव्यः ग्रन्थः-

विश्वकथाशतकम् (भागद्वयम्, 1987, 1988 पद्म शास्त्री, देवनागर प्रकाशन, जयपुर)